NEW ERA AGRICULTURE MAGAZINE

स्ट्राबेरी की खेती से दोगुना हुई आमदनी

यशवंत गेहलोत[1], प्रियंका जादौन[2], सोमदत्त त्रिपाठी[3]

ये है सोदान सिंह की सफलता की कहानी

परिचय:

स्ट्राबेरी की खेती कर कृषक **"सोदान सिंह"** ने सरकार के किसानों की आय दुगुना करने के सपनें को हकीगत में बदला| ग्राम बोरखेडी बजायक्ता जिला भोपाल के निवासी श्री सोदानसिंह ने अनुपयोगी कृषि भूमि में स्ट्राबेरी की खेती प्रारंभ करके एवं कम लागत में अधिक आय प्राप्त कर सोदानसिंह ने अपनी आय बहुत कम समय में दुगुना कर लिया हैं|

श्री सोदानसिंह पिता गोरेलाल कुशवाह बताते है की पूर्व में वे परम्परागत तरीके से खेती करते थे जिससे उनको कुछ खास आमदनी प्राप्त नही हो पा रही थी, बाद में उन्होंने खेती के इस परम्परागत तरीके को छोड़कर कृषि विभाग के अधिकारियों की सहायता से स्ट्राबेरी की खेती की शुरुवात की |

वे बताते है की स्ट्राबेरी की खेती के लिए उन्होंने ड्रिप एवं मल्चिंग तकनिकी का उपयोग किया | सोदानसिंह ने बताया की प्रथम वर्ष उन्हें लगभग एक लाख रूपयें का खर्चा खेत को व्यवस्थित कराने एवं मल्चिंग में आया |

उन्होंने एक एकड़ में लगभग 24000 पोधे लगायें, प्रति पौधे कीमत 10 रुपए के हिसाब से उनको दो लाख चालीस हजार का खर्चा आया |जिससे उन्हें प्रथंम वर्ष में 2 - 2.5 लाख की आमदनी हुई एवं दूसरें वर्ष से 7-8 लाख रूपये प्रतिवर्ष आमदनी प्राप्त होने लगी | इस तरह कृषक सोदानसिंह ने स्ट्राबेरी की खेती कर अपनी आमदनी को बढ़ाया |

स्ट्राबेरी की खेती में ध्यान रखने वाली कुछ बातें-

- साधारणत: स्ट्रॉबेरी की रोपाई सितंबर - अक्टूबर में की जाती है। लेकिन ठंडी जगहों पर इसे फरवरी - मार्च में भी लगाया जा सकता है। वहीं पॉलीहाउस में या संरक्षित विधि से खेती करने वाले किसान अन्य महीनों में भी रोपाई कर सकते हैं।
- स्ट्रॉबेरी की रोपाई से पहले की तैयारी बहुत जरूरी है। खेत की मिट्टी पर विशेष काम करना पड़ता है। इसके लिए आप उद्यानिकी विभाग या कृषि विभाग से संपर्क करके जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए बेड जमीन से 15

यशवंत गेहलोत[1], प्रियंका जादौन[2], सोमदत्त त्रिपाठी[3]
[1]पीएचडी शोध छात्र, भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान- भोपाल
[2]कृषि विस्तार अधिकारी, किसान कल्याण एवं कृषि विकास विभाग म.प्र. शासन
[3]शोध छात्र , कृषि प्रसार विभाग , बाँदा कृषि एवं प्रोधोगिक विश्विद्यालय बाँदा

सेंटीमीटर ऊंचा बनाया जाता है। इन्हीं क्यारियों पर स्ट्रॉबेरी के पौधे लगाए जाते हैं।

- पौधे से पौधे की दूरी और कतार से कतार की दूरी 30 सेंटीमीटर रखनी चाहिए यानि 1 कतार में इसके करीब 30 पौधे लगाए जा सकते हैं।
- रोपाई के बाद इस बात का ध्यान रखें कि पौधों पर फूल आने पर मल्चिंग जरूर करें। मल्चिंग काले रंग की 50 माइक्रोन मोटाई वाली पॉलीथीन से करनी चाहिए। इससे खरपतवार पर नियंत्रण होता है और फल सडऩे से बच जाते हैं। मल्चिंग करने से पैदावार बढ़ोतरी होती है और मिट्टी में नमी ज्यादा समय तक बनी रहती है।
- पहाड़ी इलाकों में बरसात होने पर स्ट्रॉबेरी के पौधों को पॉलीथीन से ढकने की सलाह दी जाती है। इससे फलों के गलने की समस्या नहीं होती है।
- स्ट्रॉबेरी के पौधे लगाने के बाद सिंचाई के लिए ड्रिप या स्प्रिंकलर का प्रयोग करना चाहिए। इससे पानी की बचत होती है और उत्पादन में भी बढ़ोतरी होती है।
- स्ट्रॉबेरी से अच्छी पैदावार हासिल करने के लिए खाद बहुत जरूरी है। आप मिट्टी और स्ट्रॉबेरी की किस्म के आधार पर खाद दे सकते हैं। इसके लिए कृषि वैज्ञानिक से सलाह जरूर ले लेनी चाहिए।
- स्ट्रॉबेरी के फल की तुड़ाई करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए, जब फल का रंग आधे से अधिक लाल हो जाए तब ही इसकी तुड़ाई कर लेनी चाहिए। इसके लिए मार्केट की दूरी का ध्यान भी रखना चाहिए। इसके लिए आप अलग-अलग दिन इसकी तुड़ाई कर सकते हैं।